Unit 6

'Learning and teaching' TC-201

Meaning of Social group समाजिक समूह का अर्थ :-

मनुष्य का जीवन वास्तव में सामूहिक जीवन है। मनुष्य को सामाजिक प्राणी कहने का तात्पर्य भी यही है कि वह समूह में रहता है। प्रत्येक व्यक्ति का जन्म समूह में ही होता है एवं समूह के माध्यम से ही वह अपनी आवश्यकता की पूर्ति एवं पूर्ति करने के तरीके को सीखता है। इस प्रकार मनुष्य का जीवन जैसे - (परिवार) की सदस्यता से ही शुरू होता है। Johnson के अनुसार, समाजशास्त्र वह विज्ञान है, जो समूहों का अध्ययन करता है।

सामाजिक समूह केवल व्यक्तियों का एक योग है जो नियमित रूप से एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया करते हैं। इस तरह की नियमित अन्तःक्रियाएँ समूह समूह के सदस्यों को एक निश्चित ढाँचे का रूप देती है। इन सदस्यों की पूर्ण रूप से सामाजिक पहचान अपने समूह से ही होती है। आकार की दृष्टि से समूह में विभिन्नता आती है।

सामाजिक समूह (Social group) किसी भी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के ऐसे समूह को कहते हैं जो एक-दूसरे से संपर्क व लेनदेन रखें, जिनमें एक-दूसरे से कुछ सामानताएँ हो और जो आपस में एकता की भावना रखें। इस तरह सामाजिक समूह केवल व्यक्तियों का एक योग है जो नियमित रूप से एक दूसरे के साथ अन्तक्रिया करते हैं। इस प्रकार सामाजिक समूह की पहचान होती है।

अतः जब कभी भी दो या दो से अधिक व्यक्ति एकत्रित होते है, और एक दूसरे को प्रभावित करते है तो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते है। अर्थात् इसे हम सामाजिक समूह कह सकते हैं। इसका उद्देश्य अपने समूह के सदस्यों के व्यक्तित्व परिधि का विस्तार करना और मानवीय सम्बन्धों को बढ़ाना है। इस प्रकार यह व्यक्तियों में आत्मविश्वास आत्म निर्भरता एवं आत्म निर्देशन का भी विकास करती है।

Scanned by CamScanner

Unit-6

(LEARNING AND TEACHING)
TC-201

(Characteristics of Social group)
सामाजिक ~~समूह~~ समूह की विशेषताएँ :-

(1) संपर्क और अन्त: क्रिया → समूह के लिये आवश्यक है कि व्यक्तियों में पारस्परिक संपर्क हो और उनके बीच में अन्तक्रियाएँ हों। मर्टन अन्तक्रियाओं पर सबसे अधिक जोर देते हैं। निश्चित रूप से अन्तक्रियाएँ समूह की प्राणवायु हैं

(2) पारस्परिकता की चेतना! →
समूहों के सदस्यों में यह चेतना होनी चाहिये कि, उनके समूह के सदस्य उनके ही भाई-बन्धु हैं हम सब एक ही आंगन की उपज हैं, यह चेतना समूह के लिये आवश्यक है। समूह के प्रति इस चेतना को कार्ल मार्क्स ने अधिक महत्व के साथ रखा है।

(3) समान लक्ष्य : →
कोई भी व्यक्ति किसी भी समूह का सदस्य समान लक्ष्यों के कारण बनता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है, जब समूह के लक्ष्य अपने आप सदस्य के लक्ष्य बन जाते हैं

(4) समान मानदण्ड : →
वस्तुतः लक्ष्य साध्य होते हैं और मानदण्ड साधना साध्य और साधन समूह के अनिवार्य तत्व हैं ऐसी स्थिति में जब व्यक्ति साध्यों की प्राप्ति के लिये समूह का सदस्य बनता है तो मानदण्ड भी एक जैसे होते हैं

(5) समान मूल्य : →
मानदण्ड का उंचा स्तर मूल्य होते हैं। इस दृष्टि से जब प्रत्येक समूह के मानदण्ड होते हैं, तब उनके कुछ मूल्य भी होते हैं। समूह के सदस्यों का यह प्रयास होता है कि, वे अपने निर्धारित मूल्यों को प्राप्त कर सकें।

(6) सदस्यों की बहुलता! →
कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितना ही महान क्यों न हो, समूह नहीं बनाता।

Scanned by CamScanner

समूह के लिये कम से कम दो व्यक्ति होने चाहिये। अधिकतम सदस्यों की संख्या वहाँ तक सीमित है जहाँ तक सदस्यों के बीच में किसी न किसी तरह की अन्तक्रिया सम्भव हो।

(7) इकाई समझने की भावना :→

साधारण शब्दों में, व्यक्ति की पहचान उसके समूह से है, जिसका वह सदस्य है और दूसरी ओर समूह की पहचान उसके सदस्यों से है। दोनों का अस्तित्व पारस्परिक पहचान पर निर्भर है।

(8) संरचनात्मक संबंध :→

एकत्रित व्यक्ति समूह हो सकते हैं यदि वे कुछ भूमिकाओं और मानकों की स्थापना के द्वारा संचालित अन्तक्रिया में संलग्न हों। आपसी संबंध भूमिकाओं की प्रणाली में भागीदारी और सामान्य हित के संबंधित मामलों के मानकों में साझीदार हों।

सभी विशेषताएँ समान रूप से महत्वपूर्ण है यद्यपि यह संभव है कि सभी समाज वैज्ञानिकों की सहमति से यह जाना जा सकता है कि, कौन सी विशेषताएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं। वस्तु प्रकार विभिन्न समाज वैज्ञानिकों द्वारा दी गई सभी पहलुएँ महत्वपूर्ण हैं। सबसे महत्वपूर्ण यह है कि समूह व्यक्ति के व्यक्तित्व को आदर्श रूप में ढालने का एक साधन है जो कि समस्या समाधान, आत्म-प्रतिष्ठा का निर्माण, हर्ष संकलप तथा समाज में व्यक्ति के सामाजीकरण के मामलों के लिये अवसर उपलब्ध कराता है।

—*—